आगामिनो—लब्धव्यस्य वस्तुनः पन्था आगामिपथस्तमिति, क्वचिदागामिपथानिति दृश्यते, क्वचिच्च आगमपहं ति, तत्र च लाभमार्गमित्यर्थः। (स्था २.४३१ वृ प ९२)

आग्नेयी धारणा

पिण्डस्थ ध्यान का एक प्रकार। इसमें साधक यह अनुभव करता है कि नाभि-कमल प्रज्वलित हो रहा है। मेरे सब दोष दग्ध हो रहे हैं।

नाभिकमलस्य प्रज्वलनेन अशेषदोषदाहचिन्तनमाग्नेयी।
(मनो ४. १९)

आचामाम्ल (आयम्बिल)

रसपरित्याग का एक प्रकार। दिन में एक समय, एक बार केवल कांजी युक्त एक धान्य के अतिरिक्त कुछ भी नहीं खाना। (औप ३५)

आचार

१. योगसंग्रह का एक प्रकार। आचार का सम्यक् प्रकार से पालन करना, उसमें माया न करना।

'आयारे' त्ति......तत्राचारोपगतः स्यात् न मायां कुर्यादित्यर्थः।
(सम ३२.१.२ वृ प ५५)

२. द्वादशांग श्रुत का पहला अंग। इसमें श्रमणों के आचार तथा महावीर के तपस्वी जीवन का निरूपण किया गया है।

आयारे णं समणाणं निग्गंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय-ट्ठाण-गमण-चंकमण-पमाण-जोगजुंजण-भासा-समिति-गुत्ती-सेज्जोवहि-भत्तपाण-उग्गम-उप्पायण--एसणा-विसोहि-सुद्धासुद्धग्गहण-वयणियमतवोवहाण-सुप्पसत्थमाहिज्जइ। (समप्र ८९)

आचारदशा

(स्था १०.११०)

(द्र दशाश्रुतस्कन्ध)

आचारधर

वह मुनि, जो आचारांग के सूत्र-पाठ और अर्थ का विशेषज्ञ होता है।

अप्पेगइया आयारधरा। (औप ४५)

आचारसम्पदा

गणिसम्पदा का एक प्रकार। आचार्य की वह संपत्ति, जो आचार में ध्रुवयोग (सतत जागरूकता) आदि विशेषताओं से उपलब्ध होती है।

आयारसंपदा चउव्विहा पण्णत्ता, तं जहा—संजमधुवजोगजुत्ते यावि भवति, असंपग्गहियप्पा, अणियतवित्ती, वुड्ढसीले यावि भवति। से तं आयारसंपदा॥ (दशा ४.४)

आचार्य

धर्मसंघ में सात पदों से एक पद। जो पांच आचार—ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य का स्वयं अनुपालन करता है, दूसरों को आचार का सक्रिय प्रशिक्षण देता है, जो अपने गुरु द्वारा गुरुपद पर स्थापित है, सूत्र-अर्थ तदुभय का ज्ञाता है, शिष्यों को सूत्र के अर्थ का अध्ययन कराने वाला है, वह आचार्य है।

पंचविहं आयारं आयारमाणा तहा पभासंता।
आयारं दंसंता आयरिया तेण वुच्चंति॥ (आवनि ९९४)

सुत्तत्थतदुभयादिगुणसम्पन्नो अप्पणो गुरुहिं गुरुपदे त्थावितो आयरिओ। (अदचू पृ २१९)

'आचार्यः' गच्छाधिपतिः। (बृभा ४३३६ वृ)

'आचार्याः' अर्थदातारः। (बृभा २७८० वृ)

(द्र उपाध्याय)

आच्छेद्य

उद्गम दोष का एक प्रकार। निर्बल व्यक्ति से छीनकर दिया जाने वाला आहार आदि लेना।

यद्बलादाच्छिद्य दीयते साधुभ्यस्तदाच्छेद्यम्।
(पिनि ९३ वृ प ६८)

आजीव

उत्पादन-दोष का एक प्रकार। अपनी जाति, कुल आदि का परिचय देकर भिक्षा लेना।

आजीवो—जाति-कुल-गण-शिल्पादिप्रकटनेन यल्लभ्यते।
(प्रसा ५६६)

आजीववृत्तिता

अनाचार का एक प्रकार। जाति, कुल, गण, शिल्प और कर्म का अवलम्बन ले भिक्षा प्राप्त करना, जो मुनि के लिए अनाचरणीय है।

जातिकुलगणकर्मशिल्पानामाजीवनम् आजीवः तेन वृत्तिस्तद्भाव आजीववृत्तिता। (द ३.६ हावृ प ११७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आजीविक

भगवान महावीर के समय का एक सुप्रसिद्ध श्रमण-सम्प्रदाय, जिसका सिद्धांत था नियतिवाद। मंखलिपुत्र गोशालक आजीविक सम्प्रदाय के धर्माचार्य थे।

'आजीविका:' गोशालकशिष्या:। (भग ८.२३० वृ)

नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, नियता सव्वभावा।

(उपा ७.२४)

आज्ञा

हित की प्राप्ति और अहित के परिहार के लिए दिया जाने वाला सर्वज्ञ का उपदेश, आगम।

आज्ञाप्यते इत्याज्ञा—हिताहितप्राप्तिपरिहाररूपतया सर्वज्ञोपदेशः। (आ ६.४९ वृ प १०२)

आज्ञापनिका क्रिया

क्रिया का एक प्रकार। आज्ञा देने से होने वाली क्रिया।

आज्ञापनस्य—आदेशनस्येयमाज्ञापनमेव वेत्याज्ञापनी सैवाज्ञापनिका। (स्था २.२९ वृ प ३९)

आज्ञापनी

असत्यामृषा (व्यवहार) भाषा का एक प्रकार। आदेश-निर्देश के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा, जैसे—अमुक काम करो।

आज्ञापनी—कार्ये परस्य प्रवर्त्तनं, यथेदं कुर्विति।

(प्रज्ञा ११.३७ वृ प २५९)

आज्ञापरिणामक

वह शिष्य, जो गुरु की आज्ञा पर कारण पूछे बिना ही श्रद्धा करता है।

आज्ञापरिणामको नाम यद् आज्ञाप्यते तत्कारणं न पृच्छति किमर्थमेतदिति किन्त्वाज्ञयैव कर्त्तव्यतया श्रद्दधाति।

(व्यभा ४४४३ वृ)

आज्ञारुचि

१. रुचि का एक प्रकार। राग, द्वेष, मोह और अज्ञान के दूर हो जाने पर वीतराग की आज्ञा (वाणी) में होने वाली रुचि।

२. आज्ञारुचि-सम्पन्न व्यक्ति।

रागो दोसो मोहो, अण्णाणं जस्स अवगयं होइ।
आणाए रोयंतो, सो खलु आणारुई नाम॥

(उ २८.२०)

आज्ञाविचय

धर्म्यध्यान का एक प्रकार। अतीन्द्रिय तत्त्व (आज्ञा) को ध्येय बनाकर उसमें होने वाली एकाग्रता।

तत्राज्ञा—सर्वज्ञप्रणीत आगमः। तामाज्ञामित्थं विचिनुयात्—पर्यालोचयेत्.....“इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं न कयाइ णासी” इत्यादि वचनात्। (तभा ९.३७ वृ)

आज्ञा व्यवहार

व्यवहार का एक प्रकार। देशान्तर में स्थित गीतार्थ से विधि-निषेध तथा प्रायश्चित्त का निर्णय प्राप्त करना।

यदगीतार्थस्य पुरतो गूढार्थपदैर्देशान्तरस्थगीतार्थनिवेदनायातिचारालोचनमितरस्यापि तथैव शुद्धिदानं साऽऽज्ञा।

(स्था ५.१२४ वृ प ३०२)

आतङ्कदर्शी

जो हिंसा करने में स्वयं का अहित देखता है, आतंक—शारीरिक या मानसिक दुःख देखता है।

आतङ्कः—शारीरं मानसं वा दुःखम्। यो हिंसाकरणे आतङ्कं पश्यति स आतङ्कदर्शी सहजमेव हिंसातो विरमति।

(आभा १.१४६)

आतपनाम

नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से जीव के अनुष्ण शरीर से भी उष्ण प्रकाश-रश्मियां निकलती हैं।

यदुदयात् जन्तुशरीराणि स्वरूपेणानुष्णान्यपि उष्णप्रकाशलक्षणमातपं कुर्वन्ति तदातपनाम।

(प्रज्ञा २३.३८ वृ प ४७३)

(द्र उद्योतनाम)

आतापनभूमि

वह स्थान, जहां आतापना ली जाती है, जैसे—पर्वत का शिखर, ऊंचा टीला आदि। (भग २.६२)

आतापना

तैजस शक्ति का विकास करने के लिए सूर्य के सम्मुख विविध आसनों की मुद्रा में लिया जाने वाला सूर्य का आतप।

......सूराभिमुहस्स आयावणभूमीए आयावेमाणस्स विहरित्तए....। (भग ११.५९)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आभिनिबोधिकज्ञानस्यावरणीयं आभिनिबोधिकज्ञाना-वरणीयम्। (प्रज्ञा २३.२५ वृ प ४६७)

आभिनिवेशिक

मिथ्यात्व का एक प्रकार। वह दृष्टिकोण, जिसके द्वारा सत् तत्त्व को जान लेने पर भी असत् तत्त्व का अभिनिवेश बना रहता है।

आभिनिवेशिकं जानतोऽपि यथास्थितं वस्तु दुरभिनिवेश-लेशविप्लावितधियो जमालेरिव भवति।

(योशा २.३ पृ १६५)

आभियोगिक देव

वह कल्पोपपन्न देव, जो प्रेष्य कर्म में नियुक्त होता है।

अभियोगः—प्रेष्यकर्मसु व्यापार्यमाणत्वम्—अभियोगेन जीवन्ति इति आभियोगिकाः। (रा १० वृ प ५२)

आभियोगी भावना

संक्लिष्ट भावना का एक प्रकार। सुख आदि से भावित चित्त वाले व्यक्ति द्वारा किया जाने वाला मंत्र आदि का प्रयोग।

मंताजोगं काउं भूईकम्मं च जे पउंजंति।
सायरसइड्ढिहेउं अभिओगं भावणं कुणइ॥

(उ ३६. २६४)

आभोग

ईहा की पहली अवस्था, जिसमें विशेष अर्थाभिमुख आलोचन प्रारम्भ हो जाता है।

ओग्गहसमयाणंतरं सब्भूतविसेसत्थाभिमुहमालोयणं आभोयणता भण्णति। (नन्दी ४५ चू पृ ३६)

आभोगनिर्वर्तित

कषाय के विपाक का ज्ञान होने पर भी प्रयोजन वश किया जाने वाला आवेश।

यदा परस्यापराधं सम्यगवबुद्ध्य कोपकारणं च व्यवहारतः पुष्टमवलम्ब्य नान्यथाऽस्य शिक्षोपजायते इत्याभोग्य कोपं विधत्ते तदा स कोप आभोगनिर्वर्तितः।

(प्रज्ञा १४.९ वृ प २९१)

आभोगबकुश

बकुश निर्ग्रन्थ का एक प्रकार। वह मुनि, जो चिन्तनपूर्वक शरीर और उपकरण की विभूषा करता है।

शरीरोपकरणभूषयोः सञ्चिन्त्यकारी आभोगबकुशः।

(स्था ५.१८७ वृ प ३२०)

आभ्यन्तर तप

कर्म शरीर (सूक्ष्म शरीर) को प्रभावित करने वाला तप, चित्त निरोध की प्रधानता के कारण कर्मक्षय का अंतरंग कारण।

आभ्यन्तरं—चित्तनिरोधप्राधान्येन कर्मक्षपणहेतुत्वात्।

(सम ६.४ वृ प १२)

आभ्युपगमिकी वेदना

स्वेच्छा से स्वीकृत तपश्चर्या से होने वाली वेदना।

आभ्युपगमिकी नाम या स्वयमभ्युपगम्यते।

(प्रज्ञा ३५.१२ वृ प ५५७)

(द्र औपक्रमिकी वेदना)

आमन्त्रणी

असत्यामृषा (व्यवहार) भाषा का एक प्रकार। आमंत्रण के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा, जैसे—हे देवदत्त!

असत्यामृषा……'आमंतणि' इति तत्र आमन्त्रणी हे देवदत्त! इत्यादि। (प्रज्ञा ११.३७ वृ प २५९)

आमर्षौषधि

लब्धि का एक प्रकार। हाथ आदि के स्पर्श मात्र से रोग दूर करने वाली योगज विभूति।

करादिसंस्पर्शमात्रादेव व्याध्यपनयनसमर्थो लब्धिः।

(विभा ७७९ वृ)

आम्नायार्थवाचक

वह आचार्य, जो आम्नाय—आगम के गूढ रहस्यमय अर्थों एवं उत्सर्ग-अपवादविधियों का प्रतिपादन करता है।

आम्नाय—आगमस्तस्योत्सर्गापवादलक्षणोऽर्थस्तं वक्तीत्याम्नायार्थवाचकः, पारमर्षप्रवचनार्थकथनेनानुग्राहकोऽक्षनिषद्यानुज्ञायी पञ्चम आचार्यः। (तभा ९.६ वृ)

आयतचक्षु

वह व्यक्ति, जिसका चक्षु संयत हो, दृष्टि अनिमेष हो।

आयतचक्षुः—संयतचक्षुः अनिमेषदृष्टिरिति यावत्।

(आभा २.१२५)

आयुसंवर्तक

आयुष्य का संवर्तन—अकाल मरण—यह मनुष्य और पंचेन्द्रिय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिर्यञ्चयोनिक जीवों के होता है।
दोण्हं आउय-संवट्टए पण्णत्ते, तं जहा—मणुस्साणं चेव, पंचेंदियतिरिक्खजोणियाणं चेव। (स्था २.२६७)

आयुष्मन्
शिष्य के लिए प्रयुक्त होने वाला मंगलसूचक आमन्त्रण।
आयुष्मन्नित्यनेन शिष्यस्यामन्त्रणम्।
(द ४.१ जिचू पृ १३०)

आयुष्यकर्म
वह कर्म, जिसके उदय से जीव भवस्थिति को प्राप्त होता है—नरक आदि अवस्थाओं को जीता है और इसके क्षय से जीव मृत कहलाता है।
एति भवस्थितिं जीवो येन इति आयुः। (जैसिदी ४.३ वृ)
आ समन्तादेति—गच्छति भवाद् भवान्तरसङ्क्रान्तौ विपाकोदयमित्यायुः। (प्रज्ञावृ प ४५४)
यस्योदयात् प्रायोग्यप्रकृतिविशेषानुशायीभूत आत्मा नारकादिभावेन जीवति यस्य च क्षयान्मृत उच्यते तदायुः।
(तभा ८.११ वृ)

आयुष्य प्राण
वह प्राण, जो जीवन को बनाए रखने की शक्ति के लिए उत्तरदायी है। (प्रसा १०६६)

आयोजिका क्रिया
वह क्रिया, जिसके द्वारा जीव अशुभ कर्म से बंधता है, जन्म-मरण के चक्र में परिभ्रमण करता है।
आयोजयन्ति जीवं संसारे इत्यायोजिकाः।
(प्रज्ञा २२.५७ वृ प ४४५)

आरण
ग्यारहवां स्वर्ग। कल्पोपपन्न वैमानिक देवों की ग्यारहवीं आवासभूमि। (उ ३६.२११)
(देखें चित्र पृ ३४६)

आरभटा
प्रतिलेखना का एक दोष। विधि से विपरीत प्रतिलेखन करना अथवा एक वस्त्र का पूरा प्रतिलेखन किए बिना आकुलता से दूसरे वस्त्र को ग्रहण करना।
आरभटा विपरीतकरणमुच्यते त्वरितं वाऽन्यान्यवस्त्रग्रहणेनासौ भवति। (उ २६.२६ शावृ प ५४१)

आरम्भ
जीव-वध की प्रवृत्ति।
प्राणिवधः आरम्भः॰॰॰॰॥ (तभा ६.९)

आरम्भक्रिया
क्रिया का एक प्रकार। छेदन-भेदन, हिंसा आदि क्रियाओं में तत्पर होना अथवा अन्य के द्वारा हिंसा आदि व्यापार किये जाने पर हर्षित होना।
छेदनभेदनविस्रंसनादिक्रियापरत्वम्, अन्येन चारम्भे क्रियमाणे प्रहर्ष आरम्भक्रिया। (तवा ६.५.११)

आरम्भ प्रतिमा
उपासक-प्रतिमा का आठवां प्रकार, जिसमें प्रतिमाधारी उपासक पृथ्वी आदि जीवों का स्वयं आरंभ—हिंसा नहीं करता।
आरंभसयंकरणं अट्ठमिया अट्ठ मास वज्जेइ। (प्रसा ९९०)

आरम्भनिश्रित
वह व्यक्ति, जो हिंसायुक्त व्यापार में आसक्त होता है।
आरम्भे—प्राण्युपमर्दनकारिणि व्यापारे निःश्रिता—आसक्ताः संबद्धा अध्युपपन्नाः। (सूत्र १.१.१० वृ प २०)

आराधक
लक्ष्य-सिद्धि के लिए सम्यक् साधना करने वाला।
(स्था ४.४२६)
आलोयणपरिणतो, सम्मं संपट्ठितो गुरुसगासे।
जदि अंतरा उ कालं करेज्ज आराहओ तहऽवि॥
(निभा ६३१२)
(द्र आराधना)

आराधना
लक्ष्य-सिद्धि के लिए की जाने वाली सम्यक् साधना।
'आराहण' त्ति आराधना—निरतिचारतयाऽनुपालना।
(भग ८.४५१ वृ)

आरोपणा प्रायश्चित्त
चतुर्विध प्रायश्चित्त का तीसरा प्रकार। एक प्रमाद का प्रायश्चित्त हुआ, दूसरा प्रमाद, उसका प्रायश्चित्त हुआ—इस प्रकार आगे से आगे होने वाला प्रायश्चित्त। एक दोष का प्रायश्चित्त चल रहा हो, उस बीच में ही उस दोष को पुनः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. सौधर्म आदि कल्पों का विमान।
(द्र क्षुल्लिकाविमानप्रविभक्ति)

आवश्यक मण्डली

मण्डली का एक विभाग, जिसकी व्यवस्था के अनुसार श्रमण गुरु की सन्निधि में आवश्यक (सामूहिक प्रतिक्रमण) करते हैं। (प्रसा ६९२ वृ प १९६)
(द्र मण्डली)

आवश्यक सूत्र

वह आगम, जिसमें दोनों संध्याओं में की जाने वाली छः आवश्यक क्रियाओं की विधि है। (नन्दी ७५)
(द्र षडावश्यक)

आवश्यकी सामाचारी

स्थान से बाहर जाते समय 'आवश्यकी' का उच्चारण करना।
गमणे आवस्सियं कुज्जा……। (उ २६.५)

आवारक कर्म

वह कर्म, जो ज्ञान और दर्शन को आवृत करता है, जैसे—ज्ञानावरण, दर्शनावरण।
तत् कर्म ज्ञानदर्शनयोरावरणस्य……हेतु भवति। (जैसिदी ४.२ वृ)

आवीचि मरण

मरण का एक प्रकार। प्रतिक्षण आयु के क्षय से होने वाला मरण।
आवीचिमरणं—प्रतिक्षणमायुर्द्रव्यविचटनलक्षणम्। (सम १७.९ वृ प ३२)

आवृतवीर्य

वह वीर्य, जो कर्म के द्वारा आच्छादित है। (कप्र पृ ५३)

आशातना

सम्यक्त्व, ज्ञान आदि की उपलब्धि में बाधा अथवा न्यूनता उत्पन्न करने वाली अवज्ञापूर्ण प्रवृत्ति।
आसातणा णामं नाणादिआयस्स सातणा। (आवचू २ पृ २१२)
सम्यक्त्वादिलाभं शातयति विनाशयतीत्याशातना। (उशावृ प ५७९)
आयः—सम्यग्दर्शनाद्यवाप्तिलक्षणस्तस्य शातना:—खण्डनं निरुक्तादाशातनाः। (सम ३३.१ वृ प ५६)

आशीविष

लब्धि का एक प्रकार। शाप के द्वारा अनिष्ट करने वाली योगज विभूति।
एते हि तपश्चरणानुष्ठानतोऽन्यतो वा गुणत आशीविष-वृश्चिक भुजङ्गादिसाध्यकर्मक्रियां कुर्वन्ति—शापप्रदाना-दिना परं व्यापादयन्तीत्यर्थः। (विभा ७८० वृ पृ ३२३)

आशुप्रज्ञ

१. वह व्यक्ति, जिसे प्रश्न करने पर प्रष्टव्य विषय का चिन्तन नहीं करना पड़ता, तत्काल सब कुछ समझ लेता है, जैसे—केवली, तीर्थंकर।
आसुपण्णे त्ति न पुच्छितो चिंतेति, आशु एव प्रजानीते आशुप्रज्ञः। (सूत्र १.५.२ चू पृ १२६)
……आसुप्रज्ञो, केवली तीर्थंकर एव। (सूत्र १.५.२ चू पृ ४०३)
२. क्षिप्रप्रज्ञ, जो प्रतिबुद्ध—प्रतिक्षण जागरूक रहता है।
आशुप्रज्ञ इति क्षिप्रप्रज्ञः क्षणलवमुहूर्त्तप्रतिबुद्ध्यमानता। (सू १.१४.४ चू पृ २२९)

आश्रव

नौ तत्त्वों में एक तत्त्व। आत्मा की वह अवस्था, जो कर्मों के आकर्षण का हेतु बनती है।
कर्माकर्षणहेतुरात्मपरिणाम आश्रवः।
……आश्रवन्ति—प्रविशन्ति कर्माणि आत्मनि येन परिणामेन स आश्रवः कर्मबन्धहेतुरिति भावः। (जैसिदी ४.१६ वृ)

आश्रव अनुप्रेक्षा

सातवीं अनुप्रेक्षा। आश्रव के स्वरूप तथा उससे होने वाले दोषों के बारे में पुनः-पुनः अनुचिन्तन करना।
आश्रवानिहामुत्रापाययुक्तान्……चिन्तयेत्। (तभा ९.७)

आश्रवद्वार

……आश्रवः, कर्मप्रवेश इति भावः। तस्य द्वाराणि—उपायाः आश्रवद्वाराणि—कर्मबन्धहेतूनि इति। (जैसिदी ४.१६ वृ)
(द्र आश्रव)

आश्वास

श्रमणोपासक के चार विश्राम। धर्माराधना करने वाला गृहस्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारक लब्धि से निर्मित किया जाने वाला शरीर।
'आहारए' त्ति तथाविधकार्योत्पत्तौ चतुर्दशपूर्वविदा योगबलेनाह्रियते। (स्था ५.२५ वृ प २८१)

आहारकशरीरबंधननाम

नामकर्म की एक प्रकृति, जिसके उदय से गृहीत और गृह्यमाण आहारक शरीर के पुद्गलों का परस्पर तथा तैजस और कार्मण शरीर के साथ संबंध स्थापित होता है।
यदुदयादाहारकशरीरपुद्गलानां गृहीतानां गृह्यमाणानां च परस्परं तैजसकार्मणपुद्गलैश्च सह सम्बन्धस्तदाहारकबन्धनम्। (प्रज्ञा २३.४३ वृ प ४७०)

आहारक समुद्घात

आहारक शरीर के निर्माण और सम्प्रेषण के समय आत्मप्रदेशों को शरीर से बाहर निकालना। यह आहारक समुद्घात शरीरनामकर्म के आश्रित होता है।
आहारकसमुद्घातः शरीरनामकर्माश्रयः। (सम ७.२ वृ प १२)
"""वैक्रिय-आहारक-तैजसनामकर्माश्रयाः वैक्रियआहारकतैजसाः। (जैसिदी ७.३० वृ)

आहारपर्याप्ति

छह पर्याप्तियों में प्रथम पर्याप्ति। आहार के योग्य पुद्गलों का ग्रहण, परिणमन और उत्सर्जन करने वाली पौद्गलिक शक्ति अथवा जीवनीशक्ति का स्रोत।
आहारपज्जत्ती णाम खलरसपरिणामसत्ती। (नन्दीचू पृ २२)
आहारप्रायोग्य-पुद्गल-ग्रहण-परिणमनोत्सर्गरूपं पौद्गलिकसामर्थ्योत्पादनम् आहारपर्याप्तिः। (जैसिदी ३.११ वृ)

आहारसंज्ञा

क्षुधावेदनीय कर्म के उदय से होने वाला क्षुधा का अभिलाषात्मक संवेदन।
क्षुद्वेदनीयोदयात् या कवलाद्याहारार्थं तथाविधपुद्गलोपादानक्रिया साऽऽहारसंज्ञा। (प्रज्ञा ८.११ वृ प २२२)

आहारसमिति योग

अहिंसा महाव्रत की एक भावना। शुद्ध आहार की गवेषणा करना।
आहारएसणाए सुद्धं उंछं गवेसियव्वं....एवं आहारसमितिजोगेण भावितो भवति अंतरप्पा। (प्रश्न ६.२०)

इ

इङ्गिताकारसम्पन्न

वह शिष्य, जो गुरु के इङ्गित—प्रवृत्ति-निवृत्ति मूलक सिर हिलाना आदि सूक्ष्म संकेत तथा आकार—दिशावलोकन आदि स्थूल संकेत को जानता है अथवा गुरु के मनोभावों को जानता है।
इङ्गितं—निपुणमतिगम्यं प्रवृत्तिनिवृत्तिसूचकमीषद् भ्रूशिरःकम्पादि, आकारः—स्थूलधीसंवेद्यः प्रस्थानादिभावाभिव्यञ्जको दिगवलोकनादिः। अनयोर्द्वन्द्वे इङ्गिताकारौ तौ अर्थाद् गुरुगतौ सम्यक् प्रकर्षेण जानाति इङ्गिताकारसम्प्रज्ञः। यद्वा इङ्गिताकाराभ्यां गुरुगतभावपरिज्ञानमेव कारणे कार्योपचाराद् इङ्गिताकारशब्देनोक्तं तेन सम्पन्नो—युक्तः।
(उ १.२ शावृ प ४४)

इङ्गिताकारसम्प्रज्ञ

(उ १.२ शावृ प ४४)
(द्र इङ्गिताकारसम्पन्न)

इङ्गिनीमरण

यावत्कथिक अनशन का दूसरा प्रकार, जिसमें प्रतिनियत स्थान पर रहकर प्रवृत्ति करने का संकल्प होता है।
इङ्ग्यते प्रतिनियतदेश एव चेष्ट्यतेऽस्यामनशनक्रियायामितीङ्गिनी तया मरणमिङ्गिनीमरणम्।
(सम १७.९ वृ प ३३)
(द्र प्रायोपगमन अनशन)

इच्छाकाम

स्वर्ण आदि पदार्थों को प्राप्त करने की कामना।
इच्छाकामः—स्वर्णादिपदार्थप्राप्तेः कामना।
(आभा २.१२१)
(द्र मदनकाम)

इच्छाकार सामाचारी

सामाचारी का एक प्रकार। सारणा (औचित्य से कार्य करने और कराने) में इच्छाकार का प्रयोग करना—आपकी इच्छा हो तो मैं आपका कार्य करूं। आपकी इच्छा हो तो कृपया मेरा अमुक कार्य करें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगार-धर्म के क्रमिक विकास के लिए जिनका आलंबन लेकर भारहीनता का अनुभव करता है।

श्रावकस्तस्य सावद्यव्यापारभाराक्रान्तस्य आश्वासाः—तद्विमोचनेन विश्रामाः। (स्था ४.३६२ वृ प २२४)

आसन्दी

अनाचार का एक प्रकार। मञ्चिका आदि पर बैठना, जो मुनि के लिए अनाचरणीय है।

आसंदी उपविसणं। (द ३.५ अचू पृ ६१)

आसुरी भावना

संक्लिष्ट भावना का एक प्रकार। क्रोध की सतत प्रवृत्ति से भावित चित्त वाले व्यक्ति का व्यवहार और आचरण।

अणुबद्धरोसपसरो तह य निमित्तंमि होइ पडिसेवि।
एएहिं कारणेहिं आसुरियं भावणं कुणइ॥

(उ ३६.२६६)

आसेवन शिक्षा

ज्ञान के अनुरूप क्रिया का उपदेश।

आसेवनशिक्षा तु प्रत्युपेक्षणादिक्रियोपदेशः। (विभा ७ वृ)

(द्र ग्रहणशिक्षा)

आस्तिक्य

सम्यक्त्व का एक लक्षण। सत्यनिष्ठा—आत्मा, पुनर्जन्म, कर्म आदि में विश्वास।

आस्तिक्यम्—सत्यनिष्ठा। (जैसिदी ५.९ वृ)

जीवादयोऽर्था यथास्वं भावैः सन्तीति मतिरास्तिक्यम्।

(तवा १.२.३०)

आहार

१. जीव द्वारा किसी भी वर्गणा के पुद्गलों का ग्रहण। औदारिक आदि तीन शरीर और छः पर्याप्तियों के योग्य पुद्गलों को ग्रहण करना।

त्रयाणां शरीराणां षण्णां पर्याप्तीनां योग्यपुद्गलग्रहणमाहारः।

(तवा २.३०)

२. भूख-प्यास को शांत करने वाले, शरीर को पोषण देने वाले पदार्थों का ग्रहण, जिसके चार प्रकार हैं—अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य।

""चउव्विहं वि आहारं—असणं पाणं खाइमं साइमं""।

(आव ६.१)

असणं पाणगं चेव खाइमं साइमं तहा।
एसा आहारविही, चउव्विहा होइ नायव्वो॥
आसुं खुहं समेई, असणं पाणाणुवग्गहे पाणं।
खे माई खाइमं ति य, साएइ गुणे तओ साई॥

(आवनि १५८७, १५८८)

आहारक

१. औदारिक आदि किसी भी वर्गणा के पुद्गलों को ग्रहण करने वाला। (प्रज्ञा १८.९४)

२. शरीर को पोषण देने वाले पदार्थों को ग्रहण करने वाला।

(द्र आहार, अनाहारक)

आहारककाययोग

आहारक शरीर के द्वारा की जाने वाली प्रवृत्ति।

(तभा २.२६ वृ)

आहारकमिश्रकाययोग

(कग्र ४.२४)

(द्र आहारकमिश्रशरीरकाययोग)

आहारकमिश्र शरीर काययोग

जब आहारक शरीर अपना कार्य सम्पन्न कर औदारिक-शरीर में प्रवेश करता है, उस समय औदारिक के साथ आहारकमिश्र काययोग होता है।

इहाहारकमिश्रशरीरकाययोगप्रयोग आहारकस्यौदारिकेण मिश्रतायां स चाहारत्यागेनौदारिकग्रहणाभिमुखस्य।

(भग ८.६३ वृ)

आहारक लब्धि

विशिष्ट लब्धि, जिसके द्वारा श्रुतकेवली विशिष्ट प्रयोजन उत्पन्न होने पर आहारक शरीर का निर्माण करते हैं।

कज्जंमि समुप्पण्णे सुयकेवलिणा विसिट्ठलद्धीय।
जं एत्थ आहरिज्जइ भणंति आहारयं तं तु॥

(अनुहावृ पृ ८७)

आहारकवर्गणा

आहारक शरीर के प्रायोग्य पुद्गल-समूह। (विभा ६३१)

आहारकशरीर

संशय-निवारण के लिए चतुर्दशपूर्वी प्रमत्त संयति के द्वारा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

······इच्छाकारो य सारणे।

इच्छा—स्वकीयोऽभिप्रायस्तया करणं—तत्कार्यनिर्वर्त्तन-मिच्छाकारः, सारणे इत्यौचित्यत आत्मनः परस्य वा कृत्यं प्रति प्रवर्त्तने, तत्रात्मसारणे यथेच्छाकारेण युष्मच्चिकीर्षितं कार्यमिदमहं करोमीति, ······अन्यसारणे च मम पात्रलेपनादि सूत्रदानादि वा इच्छाकारेण कुरुतेति।

(उ २६.६ शावृ प ५३५)

इच्छानुलोमा

असत्यामृषा (व्यवहार) भाषा का एक प्रकार। किसी के कार्य को समर्थन देने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली भाषा, जैसे—यह कार्य तुम करो, मुझे भी यह अच्छा लगता है।

इच्छानुलोमा नाम यथा कश्चित्किञ्चित्कार्यमारभमाणः कञ्चन पृच्छति, स प्राह—करोतु भवान् ममाप्येतदभिप्रेत-मिति। (प्रज्ञा ११.३७ वृ प २५९)

इच्छापरिमाण

गृहस्थधर्म का पांचवां व्रत, जिसमें परिग्रह की इच्छा का सीमाकरण किया जाता है।

अपरिमियपरिग्गहं समणोवासओ पच्चक्खाइ इच्छापरिमाणं उवसंपज्जइ। (आव परि पृ २२)

इतरेतरसंयोग

दो, तीन आदि परमाणुओं का संयोग होना; द्विप्रदेशी, त्रिप्रदेशी आदि स्कंध इसके उदाहरण हैं।

दुप्पभितीण परमाणूणं जो संजोगो सो इतरेतरसंजोगो भवति परमाणूणं। (उचू पृ १७)

इतरेतराभाव

अभाव का तीसरा प्रकार। दो वस्तुओं में परस्पर एकरूपता का अभाव, जैसे—स्तम्भ में घट के स्वरूप का अभाव और घट में स्तम्भ के स्वरूप का अभाव।

स्वरूपान्तरात् स्वरूपव्यावृत्तिरितरेतराभावः।

यथा स्तम्भस्वभावात् कुम्भस्वभावव्यावृत्तिः।

(प्रनत ३. ६३, ६४)

इत्वर परिहारविशुद्धिक

वह मुनि, जो परिहार-विशुद्धि की साधना के बाद पुनः उस साधना को स्वीकार करता है अथवा गच्छ में आ जाता है।

ये कल्पसमाप्त्यनन्तरं तमेव कल्पं गच्छं वा समुपयास्यन्ति ते इत्वराः। (प्रज्ञावृ प ६८)

इत्वरिक अनशन

सावधिक तप; इसकी अवधि है—उपवास से छह मास पर्यन्त।

इत्तरियं णाम परिमितकालियं, तं चउत्थाउ आरद्धं जाव छम्मासा। (दजिचू पृ २१)

(द्र यावत्कथिक अनशन)

इत्वरिक सामायिकचारित्र

सात दिन अथवा चार मास अथवा छः मास की अवधि वाला सामायिक चारित्र। इस अवधि की समाप्ति के बाद छेदोपस्थापन चारित्र में उपस्थापन होता है। यह प्रथम और अन्तिम तीर्थंकर के समय होता है।

इत्वरस्य भाविव्यपदेशान्तरत्वेनाल्पकालिकस्य सामायिक-स्यास्तित्वादित्वरिकः स चारोपयिष्यमाणमहाव्रतः।

(भग २५.४५४ वृ)

इन्द्र

देवों के अधिपति।

इन्द्रा भवनवासिव्यन्तरज्योतिष्कविमानाधिपतयः।

(तभा ४.४ वृ)

इन्द्रस्थावरकाय

इन्द्र से संबंधित होने के कारण पृथ्वीकाय का अपर नाम है—इन्द्रस्थावरकाय।

इन्द्रसंबंधित्वादिन्द्रः स्थावरकायः पृथिवीकायः।

(स्था ५.१९ वृ प २७९)

पंच थावरकाया पण्णत्ता, तं जहा—इंदे थावरकाए, बंभे थावरकाए, सिप्पे थावरकाए, सम्मती थावरकाए, पायावच्चे थावरकाए। (स्था ५.१९)

इन्द्रस्थावरकायाधिपति

वह देव, जो पृथ्वीकायसंज्ञक स्थावरकाय का अधिपति है।

स्थावरकायानां—पृथिव्यादीनामिति सम्भाव्यन्तेऽधिपतयो—नायकाः। (स्था ५.२० वृ प २७९)

इन्द्रिय

ज्ञान का वह स्रोत, जिसके द्वारा आत्मा (इन्द्र) का बाह्य जगत् के साथ सम्पर्क होता है और जिसके द्वारा शब्द आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषयों का ग्रहण होता है।

इन्द्र आत्मा, तस्य कर्ममलीमसस्य स्वयमर्थान् ग्रहीतुमसमर्थ-स्याऽर्थोपलम्भने यल्लिङ्गं तदिन्द्रियमित्युच्यते।

(तवा १.१४.१)

इन्द्रियदम

(दअचू पृ ९३)

(द्र इन्द्रियप्रतिसंलीनता)

इन्द्रियनिरोध

इन्द्रियों के अपने-अपने इष्ट और अनिष्ट विषयों के प्रति राग और द्वेष की वर्जना।

'इंदियनिरोहो' त्ति इन्द्रियाणि—स्पर्शनादीनि तेषां निरोधः इन्द्रियनिरोधः आत्मीयात्मीयेष्टानिष्टविषयरागद्वेषाभावः।

(ओनिवृ प १३)

इन्द्रियपर्याप्ति

छह पर्याप्तियों में तीसरी पर्याप्ति। इन्द्रिय के योग्य पुद्गलों का ग्रहण, परिणमन और उत्सर्जन करने वाली पौद्गलिक शक्ति की भवारंभ में होनेवाली संरचना।

पंचण्हमिंदियाणं जोग्गा पोग्गला चियित्तु अणाभोगनिव्व-त्तितविरियकरणेण तब्भावणयणसत्ती इंदियपज्जत्ती।

(नन्दीचू पृ २२)

इन्द्रियप्रतिसंलीनता

प्रतिसंलीनता का एक प्रकार। विषय के प्रति होने वाले इन्द्रिय-व्यापार का निरोध, इन्द्रिय द्वारा प्राप्त विषयों में राग-द्वेष का निग्रह।

सोइंदियविसयप्पयारनिरोहो वा सोइंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, चक्खिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा चक्खिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, घाणिं-दियविसयप्पयारनिरोहो वा घाणिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, जिब्भिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा जिब्भिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, फासिंदियविसयप्पयारनिरोहो वा, फासिंदियविसयपत्तेसु अत्थेसु रागदोसनिग्गहो वा, से तं इंदियपडिसंलीणया।

(औप ३७)

इन्द्रियप्रत्यक्ष

इन्द्रिय की सहायता से होने वाला पदार्थ का ज्ञान। इसके पांच प्रकार हैं—श्रोत्रेन्द्रिय प्रत्यक्ष, चक्षुरिन्द्रिय प्रत्यक्ष, घ्राणेन्द्रिय प्रत्यक्ष, जिह्वेन्द्रिय प्रत्यक्ष, स्पर्शनेन्द्रिय प्रत्यक्ष। वस्तुतः यह परोक्ष ज्ञान है।

इंदियं ति—पुग्गलेहिं संठाणणिव्वत्तिरूवं दव्विंदियं, सोइंदियमादिइंदियाणं सव्वातप्पदेसेहिं स्वावरणक्खतोव-समातो जा लद्धी तं भाविंदियं, तस्स पच्चक्खं ति इंदिय-पच्चक्खं।……परमत्थओ पुण चिंतमाणं एतं परोक्खं।

(नन्दी ५ चू पृ १४)

इंदियपच्चक्खं पंचविहं पण्णत्तं, तं जहा—सोइंदियपच्चक्खं चक्खिंदियपच्चक्खं घाणिंदियपच्चक्खं जिब्भिंदिय-पच्चक्खं फासिंदियपच्चक्खं। (नन्दी ५)

इन्द्रिययमनीय

इंद्रियों को वश में करना।

इंदियजवणिज्जे—जं मे सोइंदिय-चक्खिंदिय-घाणिंदिय-जिब्भिंदिय-फासिंदियाइं निरुवहयाइं वसे वट्टंति, सेत्तं इंदियजवणिज्जे। (भग १८.२०९)

इन्द्रियार्थविकोपन

इन्द्रियों के विषयों के प्रति अत्यधिक आसक्ति का भाव, कामविकार।

इन्द्रियार्थानां—शब्दादिविषयाणां विकोपनं—विपाकः इन्द्रि-यार्थविकोपनं कामविकार इत्यर्थः।

(स्था ९.१३ वृ प ४२३)

इन्द्रियालोकवर्जन

ब्रह्मचर्य महाव्रत की एक भावना। स्त्रियों के अङ्ग-प्रत्यङ्गों के अवलोकन का वर्जन।

मनोहराणि मानोन्मानलक्षणयुक्तानि दर्शनीयानि मृजा-वन्तीन्द्रियाणि……तदालोकनाद्युपरतिः श्रेयसीति भावयेत्।

(तभा ७.३ वृ)

इहलोकभय

भय का एक प्रकार। सजातीय से होने वाला भय, जैसे—मनुष्य को मनुष्य से होने वाला भय।

मनुष्यादिकस्य सजातीयादन्यस्मान्मनुष्यादेरेव सकाशाद्यद्भयं तदिहलोकभयम्। (स्था ७.२७ वृ प ३६९)

इहलोकाशंसाप्रयोग

मारणान्तिक संलेखना का एक अतिचार। 'मनुष्य-जीवन में

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org